

IS 19671 : 2026 / ISO 5201 : 2024
Financial Services — Code-Scanning Payment Security

This Indian Standard specifies the requirements for ensuring security in code-scanning payment systems used in financial services, with the objective of safeguarding mobile-based transactions against fraud, data breaches, and operational risks. It has been developed in alignment with international best practices and adopts a risk-based approach to address the growing use of QR codes and similar technologies in digital payments. The standard focuses on transactions where payment codes are scanned either by the payer or the payee using mobile devices.

It outlines a structured framework for code-scanning payments, identifying key participants such as payer, payee, payment service providers, and code service providers, along with their respective roles. The standard categorizes payment implementations into two primary modes: payer-presented and payee-presented, and defines the mandatory steps involved in initiating and completing transactions under both modes.

This emphasizes comprehensive risk assessment by identifying common and mode-specific threats such as unauthorized access, tampering of code images, data leakage, and insecure communication. It provides detailed security objectives to ensure that only authorized parties initiate and receive payments, and that transaction data remains confidential and accurate.

It further prescribes minimum security requirements and additional guidelines, including authentication mechanisms, encryption practices, secure code generation, and protection against cyberattacks. Overall, it establishes a robust framework to enhance the security, reliability, and trustworthiness of code-scanning payment systems in the digital financial ecosystem.

IS 19671 : 2026 / ISO 5201 : 2024
वित्तीय सेवाएँ — कोड-स्कैनिंग भुगतान सुरक्षा

यह भारतीय मानक वित्तीय सेवाओं में उपयोग होने वाली कोड-स्कैनिंग भुगतान प्रणालियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यकताओं को निर्दिष्ट करता है, जिसका उद्देश्य मोबाइल-आधारित लेनदेन को धोखाधड़ी, डेटा उल्लंघन और परिचालन जोखिमों से सुरक्षित रखना है। इसे डिजिटल भुगतान में क्यूआर कोड जैसी तकनीकों के बढ़ते उपयोग को ध्यान में रखते हुए तथा अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप विकसित किया गया है। यह मानक उन लेनदेन पर केंद्रित है, जिनमें भुगतान कोड को भुगतानकर्ता या प्राप्तकर्ता द्वारा मोबाइल उपकरण के माध्यम से स्कैन किया जाता है।

यह कोड-स्कैनिंग भुगतान के लिए एक सुव्यवस्थित रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जिसमें भुगतानकर्ता, प्राप्तकर्ता, भुगतान सेवा प्रदाता और कोड सेवा प्रदाता जैसे प्रमुख पक्षों की भूमिकाओं को परिभाषित किया गया है। मानक भुगतान प्रणालियों को दो मुख्य प्रकारों— भुगतानकर्ता-प्रस्तुत और प्राप्तकर्ता-प्रस्तुत—में वर्गीकृत करता है तथा दोनों में लेनदेन को पूरा करने के अनिवार्य चरणों का वर्णन करता है।

यह मानक व्यापक जोखिम आकलन पर विशेष बल देता है और अनधिकृत पहुँच, कोड में छेड़छाड़, डेटा लीक तथा असुरक्षित संचार जैसे सामान्य एवं विशिष्ट जोखिमों की पहचान करता है। साथ ही यह सुनिश्चित करने हेतु सुरक्षा उद्देश्यों को परिभाषित करता है कि केवल अधिकृत पक्ष ही भुगतान शुरू करें और प्राप्त करें, तथा लेनदेन से संबंधित जानकारी सुरक्षित और सही बनी रहे।

इसके अतिरिक्त, यह मानक न्यूनतम सुरक्षा आवश्यकताओं और अतिरिक्त दिशानिर्देशों को निर्धारित करता है, जिनमें प्रमाणीकरण तंत्र, एन्क्रिप्शन, सुरक्षित कोड निर्माण तथा साइबर हमलों से सुरक्षा के उपाय शामिल हैं। समग्र रूप से, यह मानक डिजिटल वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र में कोड-स्कैनिंग भुगतान प्रणालियों की सुरक्षा, विश्वसनीयता और भरोसे को सुदृढ़ करने के लिए एक मजबूत ढांचा प्रदान करता है।